JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानन्द का दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन

कौशल कुमार, शोधार्थी, ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर
डॉ० योगेश्वर प्रसाद शर्मा, शोध निर्देशक, ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर

विवेकानन्द का दार्शनिक चिन्तन

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता के एक बंगाली कायस्थ परिवार में 12 जनवरी, 1863 को हुआ था। इनका वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ते के उच्च न्यायालय में एटर्नी (वकील) थे। वे बड़े बुद्धिमान, ज्ञानी, उदारमना, परोपकारी एवं गरीबों की रक्षा करने वाले थे। स्वामी जी की माँ श्रीमती भुवनेश्वर देवी भी बड़ी बुद्धिमती, गुणवती, धर्मपरायण एवं परोपकारी थीं। स्वामी जी पर इनका अमिट प्रभाव पड़ा। ये बचपन से ही पूजा पाठ मे रूचि लेते थे इनकी इसी प्रवृर्ति ने आगे चलकर इन्हें नरेन्द्रनाथ से स्वामी विवेकानन्द बना दिया।

स्वामी विवेकानन्द श्री रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। श्री परमहंस ने इस सत्य की अनुभूति की थी कि परमात्मा आत्मा में है और आत्मा परमात्मा में है और उन्होंने इस सत्य की अनुभूति अपने शिष्य विवेकानन्द को भी कराई थी। इसके साथ–साथ श्री विवेकानन्द ने वेदों और उपनिषदों का गूढ़ अध्ययन किया था और उनके द्वारा प्रतिपादित सत्यों की जीवन में अनुभूति की थी।

वैदिक धर्म और दर्शन भिन्नताओं का योग है। स्वामी विवेकानन्द वेदान्त दर्शन को मानते थे। वेदान्त के भी तीन रूप हैं – द्वैत, विशिष्टाद्वैत और अद्वैत। स्वामी जी अद्वैत के समर्थक थे। इनके अनुसार द्वैत, विशिष्टाद्वैत और अद्वैत, इनमें कोई अन्तर नहीं है; ये तीनों वेदान्त दर्शन के तीन सोपान हैं, जिनका अन्तिम लक्ष्य अद्वैत की अनुभूति ही है। इतना ही नहीं, अपितु स्वामी जी तो विश्व के सभी धर्मों और दर्शनों को अन्त में अद्वैत की ओर झुका बताते थे।

धर्म और दर्शन के प्रति स्वामी जी का दृष्टिकोण बड़ा वैज्ञानिक था। इन्होंने स्पष्ट किया कि कला, विज्ञान और धर्म, एक ही परम सत्य को व्यक्त करने के तीन विभिन्न साधन हैं। अद्वैत वेदान्त को ये सार्वभौमिक विज्ञान धर्म(Universal Science Religion) कहते थे। इन्होंने वेदान्त को आधुनिक परिपेक्ष्य में देखने–समझने और उसकी वैज्ञानिक व्याख्या करने का स्तुत्य प्रयास किया है। यही उनके अद्वैत वेदान्त का नयापन है और इसी आधार पर इनके दार्शनिक चिन्तन को नव्य वेदान्त कहा जाता है। यहाँ स्वामी जी के नव्य वेदान्त की तत्त्व मीमांसा, ज्ञान एवं तर्क मीमांसा और मूल्य एवं आचार मीमांसा प्रस्तुत है।

विवेकानन्द के नव्य वेदान्त की तत्त्व मीमांसा

अद्वैत दर्शन के अनुसार ब्रह्म इस सृष्टि का आदि तत्त्व है और वही इस ब्रह्माण्ड की रचना का कर्ता और उपादान कारण है। वेदान्तियों का तर्क है कि जिस प्रकार मकड़ी अपने जाले का निर्माण स्वयं करती है। शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग और जाले बनाने का पदार्थ अपने अन्दर से निकालती है ठीक उसी प्रकार ब्रह्म इस ब्रह्माण्ड का निर्माण स्वयं करता है और इसका उपादान कारण भी वह स्वयं ही है। स्वामी विवेकानन्द इस सत्य को स्वीकार करते थे। इस सिद्धान्त के अनुसार संसार के सभी स्थूल पदार्थ और सूक्ष्म आत्माएं ब्रह्म अर्थात् परमात्मा के अश है। दूसरे शब्दों में यह सारा संसार ब्रह्ममय है। प्रश्न उठता है कि इस ब्रह्म का स्वरूप क्या है। अद्वेतवादियों के अनुसार ब्रह्म एक ऐसी शक्ति है जिसका कोई स्वरूप नहीं है, यह निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है। माया के योग से यह साकार ब्रह्म (ईश्वर) का रूप धारण करता है। यह स्थूल इन्द्रिय ब्रह्म जगत और उसके समस्त पदार्थ भी उसके साकार रूप है।

आत्मा के सम्बन्ध में भी स्वामी जी अद्वैतवादियों के विचार से सहमत हैं। इनके अनुसार सभी आत्माएँ परमात्मा का अंश मात्र हैं और परमात्मा की भाँति वे भी अनादि और अनन्त है अतः उनके जन्म और मरण का प्रश्न नहीं उठता। अद्वैत के अनुसार संसार के अन्य पदार्थ भी ब्रह्म अर्थात् परमात्मा के ही अंश और अन्य पदार्थों में अन्तर इतना है कि आत्मा सर्वव्यापी और सर्वज्ञाता है और उसमें अपने वास्तविक स्वरूप परमात्मा को समझने और उसे प्राप्त करने का गुण है जबकि अन्य पदार्थों में यह गुण नहीं है। इस सिद्धान्त के अनुसार जब तक आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप परमात्मा को नहीं पहचानती और उसे प्राप्त नहीं कर लेती तब तक वह एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती रहती है और जब वह अपने

वास्तविक स्वरूप को समझ लेती है और उसे प्राप्त हो जाती है तब वह ऐहिक जीवन से मुक्त हो जाती है, इसी को स्वामी जी मुक्ति कहते थे।

विवेकानन्द के नव्य वेदान्त की ज्ञान एवं तर्क मीमांसा

स्वामी जी ने ज्ञान को दो भागों में बाँटा है–भौतिक ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान । भौतिक ज्ञान के अन्तर्गत इन्होंने वस्तुजगत (उसकी समस्त वस्तुओं और क्रियाओं) के ज्ञान को रक्खा और आध्यात्मिक ज्ञान के अन्तर्गत सूक्ष्म जगत (परमात्मा, आत्मा और जीवात्माओं) के ज्ञान और सूक्ष्म जगत के ज्ञान को प्राप्त करने के साधन मार्गों (ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग और राज योग) के ज्ञान को रक्खा है। वेदान्त के प्रतिपादक शंकर के अनुसार वस्तु जगत का ज्ञान असत्य ज्ञान है और सूक्ष्म जगत का ज्ञान सत्य ज्ञान है। परन्तु विवेकानन्द जगत और सूक्ष्म जगत दोनों के ज्ञान को सत्य ज्ञान मानते थे। इनका तर्क है कि यह वस्तु जगत ब्रह्म द्वारा ब्रह्म से निर्मित है और ब्रह्म सत्य है, तब यह जगत भी सत्य होना चाहिए। सत्य से असत्य की उत्पत्ति कैसे हो सकती है। अतः इसका ज्ञान भी सत्य ज्ञान की कोटि में आता है। जहाँ तक ज्ञान प्राप्ति के साधनों की बात है, इस सन्दर्भ में भी स्वामी जी के विचार स्पष्ट हैं। इनके अनुसार वस्तु जगत का ज्ञान प्रत्यक्ष विधि और प्रयोग विधि से होता है और सूक्ष्म जगत का ज्ञान सत्संग, स्वाध्याय और योग द्वारा होता है। योग को तो ये किसी भी प्रकार के ज्ञान (वस्तु जगत अथवा सूक्ष्म जगत के ज्ञान) प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि मानते थे।

विवेकानन्द के नव्य वेदान्त की मूल्य एवं आचार मीमांसा

स्वामी जी मनुष्य को आत्माधारी मानते थे और शंकर की इस बात से सहमत थे कि मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य मुक्ति है, इस संसार के आवागमन से छुटकारा प्राप्त करना है.। आत्मा का परमात्मा में लीन करना है; परन्तु ये इस वस्तु जगत और उसमें मानव जीवन को भी सत्य मानते थे इसलिए वस्तु जगत में कराने पर बल देते थे। शारीरिक दुर्बलता, मानसिक दासता, आर्थिक अभाव और हीनता की भावना से भी इन दोनों प्रकार की मुक्ति के लिए इन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति को अध्ययनशील, विवेकशील एवं कर्मशील होने का उपदेश दिया है।

विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन

स्वामी विवेकानन्द भारतीय दर्शन के पण्डित और अद्वैत वेदान्त के पोषक थे। ये वेदान्त को व्यावहारिक रूप देने के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके दार्शनिक विचार सैद्धान्तिक रूप में इनके द्वारा विरचित पुस्तकों में पढ़े जा सकते हैं और इनका व्यावहारिक रूप रामकृष्ण मिशन के जन कल्याणकारी कार्यों में देखा जा सकता है। स्वामी जी अपने देशवासियों की अज्ञानता और निर्धनता, इन दो से बहुत चिन्तित थे और इन्हें दूर करने के लिए इन्होंने शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया था। ये अपने और अपने साथियों को केवल वेदान्त के प्रचार में ही नहीं लगाए रहे, इन्होंने जन शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में भी बड़ा योगदान दिया है। भारतीय शिक्षा को भारतीय स्वरूप प्रदान करने के लिए ये सदैव स्मरण किए जाएँगे। यहाँ इनके शैक्षिक विचारों का क्रमबद्ध वर्णन प्रस्तुत है ।

शिक्षा का सम्प्रत्यय

स्वामी जी शिक्षा के द्वारा मनुष्य को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवनों के लिए तैयार करना चाहते थे। इनका विश्वास था कि जब तक हम भौतिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुखी नहीं होते तब तक ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग, ये सब कल्पना की वस्तु हैं। लौकिक दृष्टि से इन्होंने नारा दिया– "हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी बनें।"

शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों रूपों को वास्तविक मानते थे, सत्य मानते थे। इसलिए मनुष्य के दोनों पक्षों के विकास पर बल देते थे। इनकी दृष्टि से शिक्षा के द्वारा मनुष्य का भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का विकास होना चाहिए। जो शिक्षा ये दोनों कार्य करे उसे ये पूर्ण शिक्षा (Complete Education) कहते थे। इस हेतु स्वामी जी ने शिक्षा के जिन उद्देश्यों पर बल दिया है उन्हें हम अग्रलिखित रूप में क्रमबद्ध कर सकते हैं–

शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग

1. **शारीरिक विकास** –––स्वामी जी भौतिक जीवन की रक्षा एवं उसकी जरूरतों की पूर्ती ओर आत्मानुभूति दोनों के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता समझते थे।
2. मानसिक एवं बौद्धिक विकास ––स्वामी जी ने भारत के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण उसके बौद्धिक पिछड़ेपन को बताया और इस बात पर बल दिया कि हमें अपने बच्चों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना चाहिए।
3. **समाज सेवा की भावना का विकास** –––स्वामी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि पढ़–लिखने का अर्थ यह नहीं कि अपना ही भला किया जाए, मनुष्य को पढ़–लिखने के बाद मनुष्य मात्र की भलाई करनी चाहिए।

4. **नैतिक एवं चारित्रिक विकास**———स्वामी जी ने यह बात अनुभव की कि शरीर से स्वस्थ, बुद्धि से विकसित और अर्थ से सम्पन्न होने के साथ—साथ मनुष्य को चरित्रवान भी होना चाहिए। चरित्र ही मनुष्य को सत्यनिष्ठ बनाता है, कर्त्तव्यनिष्ठ बनाता है। इसलिए इन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर भी बल दिया।

5. **व्यावसायिक विकास** — स्वामी जी ने भारत की दरिद्र जनता को बड़े निकट से देखा था। साथ ही इन्होंने पाश्चात्य देशों के वैभवशाली जीवन को भी देखा था और इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि उन देशों ने यह भौतिक सम्पन्नता ज्ञान—विज्ञान और तकनीकी के विकास और प्रयोग से प्राप्त की है। अतः इन्होंने उद्घोष किया कि कोरे आध्यात्मिक सिद्धान्तों से जीवन नहीं चल सकता, हमें कार्य हर क्षेत्र में आगे आना चाहिए। इसके लिए इन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्यों को उत्पादन एवं उद्योग कार्यों तथा अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षित करने पर बल दिया।

6. **राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व का विकास** ———स्वामी जी के समय हमारा देश अंग्रेजों के आधीन था, हम परतन्त्र थे। स्वामी जी ने अनुभव किया कि परतन्त्रता हीनता को जन्म देती है और हीनता हमारे सारे दुःखों का सबसे बड़ा कारण

7. **धार्मिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक विकास** — स्वामी जी शिक्षा द्वारा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास पर समान बल देते थे। इनका स्पष्ट मत था कि मनुष्य का भौतिक विकास आध्यात्मिकता ऐसा तभी सम्भव है जब मनुष्य धर्म का पालन करे। धर्म को स्वामी जी उसके व्यापक रूप में लेते थे।

शिक्षा की पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या तो उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होती है। स्वामी जी ने अपने द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु एक विस्तृत पाठ्यचर्या का विधान प्रस्तुत किया। इन्होंने शिक्षा की पाठ्यचर्या में मनुष्य के शारीरिक विकास हेतु खेल—कूद, व्यायाम और यौगिक क्रियाओं और मानसिक एवं बौद्धिक विकास हेतु भाषा,कला, संगीत, इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित और विज्ञान विषयों को स्थान देने पर बल दिया।

शिक्षण विधियाँ

1. **अनुकरण विधि** — स्वामी जी यह बात जानते थे कि मनुष्य प्रारम्भ में भाषा और व्यवहार की विधियाँ अनुकरण द्वारा ही सीखता है इसलिए इन्होंने शुद्ध भाषा और समाज सम्मत आचरण की शिक्षा के लिए इसे सर्वोत्तम विधि बताया।

2. **व्याख्यान विधि** —तथ्यों की जानकारी मौखिक रूप से देने की विधि को व्याख्यान विधि कहते हैं। स्वामी जी य बात मानते थे कि पूर्वजों द्वारा खोजे सत्यों का ज्ञान व्याख्यान विधि द्वारा सरलता और शीघ्रता से कराया जा सकता है।

4. **निर्देशन और परामर्श विधि** — वैयष्टिक निर्देशन और परामर्श द्वारा शिक्षार्थियों का मार्ग निर्देशन करने, उनकी स्वयं सीखने में सहायता करने और बीच—बीच में उनकी शंकाओं का समाधान करने की विधि को निर्देशन एवं परामर्श विधि कहते हैं।

5. **प्रदर्शन एवं प्रयोग विधि** — स्वामी जी प्रायोगिक विषयों—विज्ञान एवं तकनीकी और क्रियाओं के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए इस विधि के प्रयोग का समर्थन करते थे।

6. **स्वाध्याय विधि** स्वाध्याय को स्वामी जी तब तक अधूरा मानते थे जब तक उस पर चिन्तन, मनन और निदिध्यासन नहीं किया जाए। इनका उद्घोष था कि किसी भी तथ्य को विवेक की कसौटी पर कसकर ही स्वीकार करो।

7. **योग विधि** स्वामी जी इसे भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने अथवा जान की खोज करने की सर्वोत्तम विधि मानते हैं।

अनुशासन

मनुष्य जीवन के मुख्य रूप से तीन पक्ष होते है प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक। स्वामी जी इन तीनों पक्षों को महत्त्व देते थे, परन्तु सर्वाधिक महत्त्व आध्यात्मिक पक्ष को देते थे। स्वामी जी शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को आत्मानुशासन का उपदेश देते थे।

शिक्षक

स्वागी जी प्राचीन गुरुगृह प्रणाली के समर्थक थे। इनकी दृष्टि से शिक्षकों को भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान होना चाहिए जिससे वे बच्चों को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार कर सकें। ये शिक्षकों को संयमी और आत्मज्ञानी होने का उपदेश देते थे, तभी तो शिष्य उनका अनुकरण कर संयमी एवं आत्मज्ञानी हो सकते हैं।

शिक्षार्थी

स्वामी जी के अनुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक, किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करें।

विद्यालय

स्वामी जी गुरु गृह प्रणाली के हामी थे। परन्तु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ये यह जानते थे कि अब गुरु गृह जन कोलाहल से दूर कहीं प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थापित नहीं किए जा सकते। ये केवल इस बात पर बल देते थे कि विद्यालयों का पर्यावरण शुद्ध हो और वहाँ व्यायाम, खेल–कूद, अध्ययन अध्यापन और इन सबके साथ–साथ समाज सेवा भजन–कीर्तन एवं ध्यान की क्रियाएँ भी सम्पादित हों।

शिक्षा के अन्य पक्ष

जन शिक्षा––स्वामी जी के समय अपने देश की स्थिति बड़ी दयनीय थी। इसके विपरीत पश्चिमी देशों की दशा बहुत अच्छी थी, वहाँ के लोग सम्पन्न थे और वैभवशाली जीवन जी रहे थे। इन्होंने उद्घोष किया कि जब तक भारत के सभी नर–नारी शिक्षित नहीं होते तब तक हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकते। इन्होंने शिक्षित लोगों का आह्वान किया कि वे अशिक्षित प्रौढ़ों और वृद्धों को साक्षर बनाएँ, उन्हें शिक्षित करें।

स्त्री शिक्षा – स्वामी जी अपने देश की स्त्रियों की दयनीय दशा के प्रति बड़े सचेत थे। इन्होंने उद्घोष किया कि नारी का सम्मान करो, उन्हें शिक्षित करो और उन्हें आगे बढ़ने के अवसर दो।

सह शिक्षा स्वामी जी सह शिक्षा के विरोधी थे। इनका पहला तर्क तो यह था कि स्त्री–पुरुषों की शिक्षा की यचर्या समान नहीं होती इसलिए उन्हें साथ–साथ कैसे पढ़ाया जा सकता है। इनका दूसरा तर्क यह था कि सह शिक्षा आत्म संयम में बाधक होती है। ये लड़कियों के लिए अलग विद्यालयों की स्थापना करने और उनमें केवल स्त्री शिक्षिकाओं की नियुक्ति करने के पक्ष में थे।

व्यावसायिक शिक्षा स्वामी जी ने अपने देश की नंगी तस्वीर देखी थी और साथ ही पाश्चात्य देशों का वैभव देखा था। इन्होंने अनुभव किया कि अपने देश की निर्धनता के दो मुख्य कारण हैं–सामान्य शिक्षा का अभाव और विशिष्ट एवं व्यावसायिक शिक्षा का अभाव। अतः इन्होंने पहला नारा जन शिक्षा का दिया और उद्योगों और सामान्य शिल्पों की शिक्षा से नहीं था अपितु पाश्चात्य देशों के विज्ञान और तकनीकी शिक्षा से भी था, देश के लिए देश में ही इन्जीनियर, डॉक्टर और वकील आदि तैयार करने से भी था, प्रशासक और सम्बन्ध में स्वामी जी की दो बातें और उल्लेखनीय है जो इन्होंने शिकागो सहिष्णुता और विश्व की शिक्षा दे। स्वामी जी शिक्षा अनिवार्य रूप से देने पर बल देते थे।

विवेकानन्द के शैक्षिक चिन्तन का मूल्यांकन

किसी वस्तु क्रिया, अथवा विचार का मूल्यांकन किन्हीं पूर्व निश्चित मानदण्डों के आधार पर किया जाता है। शिक्षा मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया है, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि करने की प्रक्रिया है और उसके आचार, विचार और व्यवहार को उचित दिशा प्रदान करने की प्रक्रिया है। तब किसी शैक्षिक चिन्तन अथवा व्यवस्था का मूल्यांकन इसी आधार पर किया जाना चाहिए कि वह इस प्रकार की शिक्षा के निर्माण में कितनी सहायक हुई है अथवा हो सकती है। थे युगद्रष्टा इस दृष्टि से कि इन्होंने अपने समय के अपने देश की स्थिति को देखा–समझा था; और युगसृष्टा इस दृष्टि से कि इन्होंने नवभारत के निर्माण की नींव रखी थी। यूँ तो ये भारतीय धर्म–दर्शन की व्याख्या आधुनिक परिपेक्ष्य में करने, वेदान्त को व्यावहारिक रूप देने एवं उसके प्रचार करने और समाज सेवा एवं समाज सुधार करने के लिए अधिक प्रसिद्ध हैं परन्तु इस सबके लिए इन्होंने शिक्षा की आवश्यकता पर बहुत बल दिया था और नए भारत के निर्माण के लिए तत्कालीन शिक्षा में सुधार के है। यही कारण है कि शिक्षा जगत में ये शिक्षाशास्त्री के रूप में जाने–पहचाने जाते हैं। यहाँ इनके शैक्षिक विचारों और कार्यों का क्रमबद्ध आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत है।

शिक्षा का सम्प्रत्यय

स्वामी जी ने शिक्षा को एक ऐसे ज्ञान एवं कौशल के रूप में स्वीकार किया है जो मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों प्रकार के विकास के लिए आवश्यक है।

शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी जी मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों प्रकार के विकास पर समान बल देते थे। इनकी दृष्टि विकास, मानसिक एवं बौद्धिक विकास, समाज सेवा की भावना का विकास, नैतिक एवं चारित्रिक विकास, से शिक्षा को ये दोनों कार्य करने चाहिए।

शिक्षा की पाठ्यचर्या

शिक्षा की पाठ्यचर्या में वे सब विषय एवं क्रियाएँ सम्मिलित की जाएँ जो मनुष्य के भौतिक शिक्षा की पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में स्वामी जी का दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। इस सन्दर्भ में इन्होंने पहली एवं आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक हैं। दूसरी बात यह कही कि देश–विदेश, जहाँ से भी जो अच्छा मिले उसे पाठ्यचर्या में स्थान दिया जाए। और तीसरी बात यह कही कि मनुष्य, समाज अथवा राष्ट्र के भौतिक विकास के लिए पाश्चात्य विज्ञान एवं तकनीकी को मुख्य स्थान दिया जाए और उन्हें समझने के लिए अंग्रेजी भाषा को स्थान दिया जाए और मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के लिए भारतीय धर्म–दर्शन को पाठ्यचर्या का अनिवार्य विषय बनाया जाए।

शिक्षण विधियाँ

शिक्षण विधियों के क्षेत्र में स्वामी जी की अपनी कोई नई देन नहीं है; इन्होंने कुछ परम्परावादी शिक्षण विधियों (अनुकरण, उपदेश, व्याख्यान, स्वाध्याय, तर्क और योग) और कुछ आधुनिक विधियों (निर्देशन, परामर्श और प्रयोग) का समर्थन किया है। इन सबमें भी इन्होंने योग विधि को सर्वोत्तम विधि बताया है।

शिक्षा के अन्य पक्ष

जन शिक्षा – जहाँ तक जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा की बात है, इन सभी क्षेत्रों में स्वामी जी ने हमारा मार्गदर्शन किया है। जन शिक्षा के सन्दर्भ में इनका दृष्टिकोण बड़ा व्यापक था; ये देश के सभी बच्चों, युवकों, प्रौढ़ों और वृद्धों को साक्षर देखना चाहते थे, उन्हें सामान्य जीवन जीने योग्य बनाना चाहते थे, उन्हें अपनी रोजी–रोटी कमाने में दक्ष करना चाहते थे। इनके इन विचारों ने हमें सामान्य, अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा, दोनों की व्यवस्था करने की प्रेरणा दी।

स्त्री शिक्षा – इसमें दो मत नहीं कि स्वामी जी ने स्त्रियों को मातृशक्ति के रूप में सम्मान देकर भारतीय संस्कृति और उसकी अस्मिता की रक्षा को है और स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता पर बल देकर हमारा बड़ा उपकार किया है परन्तु स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में इनके ये विचार कि उन्हें आदर्श गृहणी, आदर्श माताएँ और आदर्श शिक्षिकाएँ ही बनाया जाए, संकीर्ण ही कहे जाएँगे। सहशिक्षा के लिए इनकी अस्वीकृति भी आज आलोचना का विषय है।

व्यावसायिक शिक्षा देश की दरिद्रता को दूर करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था करने और उसमें पाश्चात्य विज्ञान एवं तकनीकी की शिक्षा को स्थान देने पर बल देना, इनके खुले मस्तिष्क और व्यापक दृष्टिकोण का परिचायक है। आज इसी शिक्षा द्वारा हम विकास पथ पर अग्रसर हैं।

धार्मिक शिक्षा स्वामी जी वेदान्त को सार्वभौमिक धर्म मानते थे और उसकी शिक्षा अनिवार्य रूप से धार्मिक नैतिकता की शिक्षा के पक्ष में अवश्य हैं। देने पर बल देते थे।

राष्ट्रीय शिक्षा जहाँ तक राष्ट्रीय शिक्षा की बात है स्वामी जी ने इसकी कोई रूपरेखा तो तैयार नहीं आध्यात्मिक दोनों दृ ष्टियों से आगे बढ़े, ऊँचा उठे ।

विवेकानन्द का प्रभाव

विवेकानन्द ने मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों पक्षों पर समान बल दिया और वेदान्त को जीवन में जीने का मार्ग प्रशस्त किया। इन्होंने मनुष्य के भौतिक विकास के लिए देश–विदेश के ज्ञान एवं कौशल का लाभ उठाने पर बल दिया और उसके आध्यात्मिक विकास के लिए भारतीय धर्म–दर्शन, विशेषकर वेदान्त दर्शन के ज्ञान और योग की क्रियाओं के प्रयोग पर बल दिया। इससे धर्म प्रधान भारतीय संस्कृति में भौतिक जीवन से सम्बन्धित सत्यों का महत्त्व बढ़ा, समाज में देश–विदेश के ज्ञान का लाभ उठाने की प्रवृत्ति का विकास हुआ।

उपसंहार

स्वामी विवेकानन्द इस युग के पहले भारतीय हैं जिन्होंने हमें हमारे देश की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पाश्चात्य देशों की भौतिक श्रेष्ठता से परिचित कराया और हमें अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए सचेत किया। इन्होंने उद्घोष किया कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करो और शिक्षा द्वारा उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए सक्षम करो, उसे स्वावलम्बी बनाओ,आत्मनिर्भर बनाओ, निर्भय बनाओ, स्वाभिमानी बनाओ और इन सबसे ऊपर एक सच्चा मनुष्य बनाओ जो मानव सेवा द्वारा ईश्वर की प्राप्ति में सफल हो। इन्होंने अपने दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों को मूर्तरूप देने के लिए रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, देश–विदेश में उसकी शाखाएँ खोलीं और उनके द्वारा जन सेवा एवं जन शिक्षा की व्यवस्था की । इन्होंने देश के निर्बल एवं उपेक्षित व्यक्तियों पर विशेष रूप से ध्यान दिया। काश स्वामी जी कुछ दिन और जीते ! परन्तु कुल मिलाकर स्वामी जी के शैक्षिक विचार भारतीय धर्म एवं दर्शन पर आधारित हैं और भारतीय जन जीवन के अनुकूल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा की योजना बनाने वालों को उनका प्रयोग करना चाहिए। स्वामी जी के बारे में पं० जवाहर लाल नेहरू के विचार उद्धरणीय हैं। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है 'भारत के अतीत में सरल आस्था

रखते हुए और भारत की विरासत पर गर्व करते हुए भी स्वामी जी का जीवन की समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण आधुनिक था और ये भारत के अतीत तथा वर्तमान के बीच एक बड़े संयोजक थे।

संदर्भ ग्रंथ :

1. तिवारी उमेश (एन. डी.)–प्रगतिशील भारत मे शिक्षा ,आगरा ,ज्योति प्रकाशन ।
2. गोयल डॉव राजकुमार और अग्रवाल डॉव मीरा –शिक्षा दर्शन और आत्म–विकास की अवधरणाएं ,आर. लाल बुक डिपो मेरठ ।
3. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप ,2009 शिक्षा दर्शन एवं पाश्चात्य तथा भारतीय शिक्षाशास्त्री ,आर. लाल. बुक डिपो मेरठ।
4. पचौरी प्रो0 गिरीश –समकालीन भारत और शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो ।
5. माथुर डॉव एसव एसव–शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार ,श्री विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा ।
6. पाठक, पीव डीव और त्यागी जी.एस. डी.–शिक्षा के सामान्य सिद्धांत , विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा।
7. बिहारी, प्रो0 रमन लाल एवं तोमर गजेन्द्र सिंह –विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक ,आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. बिहारी, प्रो0 रमन लाल एवं सुनीता पलोड़ –शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
9. Sharma, Y. P., & veer Singh, A. (2014). The Role of Emotional Attachment of Teachers in the Development of Self-confidence, Learning Habits and Social Adjustment of Children in the Primary Schools. *International Journal of Science and Research (Online)*, *3*(10), 889-893.
10. Sharma, Y. P. (2019). A STUDY ON THE ACHIEVEMENT MOTIVATION OF B. Ed. TRAINEES IN THE COLLEGES OF EDUCATION IN MORADABAD DISTRICT (UP) INDIA.
11. Sharma, Y. P. (2019). Inclusive Education: Trends and Challenges in India.
12. Sharma, Y. P. (2018). A study on Teachers' Attitude towards Information and Communication Technology [ICT]. *Venkateshwara International Journal of Multidisciplinary Research (ISSN 2348-7079)*, 7.
13. Sharma, Y. P. Maadhyamik star ke chhaatron kee shaikshik ruchi shaikshik santushti aur shaikshik upalabdhi ka unake vyaktitv antarmukhee bahirmukhee aayaamon ke sandarbh mein adhyayan.
14. Sharma, M. Y. P. THE EMERGENCE OF PRIVATE UNIVERSITIES IN INDIA: THE CHALLANGES AND THE PROSPECTS.